10-मेला

मेले का शोर दूर तक सुनाई दे रहा था। दलजीत ने अपने मित्र सुहेल, रोहन और उसकी छोटी बहन रीना को तेज चलने के लिए कहा ताकि समय से मेले में पहुँच सकें। मेले में प्रवेश करते ही सबके चेहरे खुशी से खिल उठे। कहीं चूड़ियों की तो कहीं खिलौनों और बर्तनों की दुकानें सजी थीं। दलजीत की नजर गुब्बारे वाले पर पड़ी।

दलजीत - गुब्बारे वाले भईया, ये गुब्बारे वाली चिड़िया कितने की है?

गुब्बारे वाला - एक चिड़िया दो रुपये की है।

दलजीत - मुझे एक चिड़िया दे दीजिए।

रोहन - रीना तुम्हें क्या चाहिए ?

रीना - मुझे तो गुब्बारे वाला गदा चाहिए।

रोहन - गुब्बारे वाले भइया एक गदा बना दीजिए। क्या आप गुब्बारे का बंदर भी बना सकते हैं ?

गुब्बारे वाला- हाँ-हाँ बना सकते हैं। आपको लम्बी पूँछ वाला बन्दर चाहिए तो तीन रुपये में बनेगा और छोटी पूँछ वाला दो रुपये में।

रोहन - मेरे लिए लम्बी पूँछ वाला बंदर बना दीजिए।

गुब्बारे के खिलौने खरीद कर सब मेले में इधर-उधर घूमते हुए आगे बढ़े। एक दुकान पर बहुत भीड़ थी। झाँक कर देखा तो वहाँ तरह-तरह के लकड़ी और प्लास्टिक के खिलौने बिक रहे थे। कुछ खिलौने चाभी से चल रहे थे तो कुछ बैटरी से चल रहे थे। सुहेल ने अपनी छोटी बहन के लिए चाभी से चलने वाला घोड़ा खरीदा। चाभी का घोड़ा चाभी भरते ही सरपट भागने लगा था। रीना को भी घोड़ा अच्छा लगा लेकिन उसका भाई बहुत छोटा था। रीना ने उसके लिए झुनझुना खरीदा।

रीना - दलजीत भईया आपने कोई खिलौना नहीं खरीदा ?

दलजीत - मुझे मिट्टी का खिलौना लेना है। मिट्टी के खिलौने मुझे बहुत अच्छे लगते हैं और कम दाम में भी मिलते हैं।

रीना - मुझे भी मिट्टी के खिलौने ज्यादा अच्छे लगते हैं। खेलते हुए गलती से ये टूट भी जाएँ तो मैं उन्हें खेत में डाल देती हूँ जिससे वे मिट्टी में गलकर मिल जाते हैं। प्लास्टिक के टूटे खिलौने मिट्टी में नहीं गलते। माँ कहती हंै कि ऐसी चीजों से खेत को नुकसान होता है।

दलजीत - रीना, तुम ठीक कह रही हो हमें प्लास्टिक से बनी चीजों का प्रयोग कम करना चाहिए।

रोहन - तुम सब लोग बाकी खरीददारी बाद में करना मुझे चाट के ठेले से बड़ी अच्छी खुशबू आ रही है। चलो पहले कुछ खाते हैं।

रीना, रोहन, सुहेल और दलजीत चाट के ठेले के पास पहुँचे।

दलजीत - मुझे गोलगप्पे खाना है।

रोहन - मैं तो चटपटा धनिया आलू खाऊँगा।

रीना - मैं आलू की टिकिया खट्टी-मीठी चटनी के साथ खाऊँगी।

सुहेल तीनों की बात सुन रहा था। उसने सबको अपने पास बुलाकर चाट के ठेले पर रखी खाने की सामग्री को देखने का इशारा किया। वहाँ सारा सामान खुला रखा था। आने-जाने वालों के पैरों से धूल उड़कर खाने की चीजों पर पड़ रही थी। कुछ चीजों पर मक्खियाँ बैठी थीं। यह देखकर सभी ने उस ठेले से कुछ भी नहीं खाया। रोहन के भूख की बेचैनी देखकर सुहेल ने मूँगफली वाले से मूँगफली खरीद कर रोहन और रीना को दिया। दलजीत ने जलेबी का ठेला दिखाया जहाँ गरम जलेबियाँ बन रही थीं। जलेबी वाले ने जलेबियों को जाली से ढककर रखा था। उसके ठेले में सामने शीशा लगा था जिससे धूल-गर्द से खाने की चीजें सुरक्षित थी। दलजीत ने गरम जलेबियाँ खरीदी। रोहन ने केले खरीदे। सबने एक जगह बैठकर केले, जलेबियाँ और मूँगफली खाईं। दलजीत ने मूँगफली और केले के छिलके, जलेबी के दोने एक पैकेट में रखकर मेले में रखे कूड़ेदान में डाल दिया।

अचानक रोहन की नजर एक बच्चे पर पड़ी। बच्चा रो रहा था। तुम रो क्यों रहे हो ? तुम्हारे माता-पिता कहाँ हैं ? रोहन ने बच्चे से पूछा। यह सुनकर बच्चा और जोर-जोर से रोने लगा, उसे रोता देखकर रीना, दलजीत, सुहेल भी परेशान हो गए। लगता है यह बच्चा खो गया है, रोहन ने कहा।

सुहेल ने बताया कि मेले में खोया-पाया शिविर है। जहाँ से इसके परिवार के लोगों को बुलाया जा सकता है। शिविर में पहुँच कर बच्चे का हुलिया माइक से बताया गया। थोड़ी ही देर में बच्चे के माता-पिता वहाँ पहुँच गए और अपने बच्चे को गले से लगा लिया। यह देखकर रीना, दलजीत, सुहेल और रोहित बहुत खुश हुए।

रोहन, रीना और सुहेल झूला झूलने गए। दलजीत को झूले में चक्कर आता है। इसलिए वह नीचे बैठकर उन्हें झूलते हुए देखने लगा। जितनी बार झूला नीचे आता दलजीत उन्हें हाथ हिलाकर उनके साथ अपनी खुशी भी व्यक्त करता।

झूला झूलने के बाद अब बारी थी सर्कस देखने की। सर्कस शुरू होने वाला था। सर्कस का जोकर पंडाल के बाहर आकर कभी गेंद तो कभी टोपी उछालने का करतब दिखाकर लोगों को सर्कस देखने के लिए उत्साहित कर रहा था। सबने सर्कस में साइकिल, जादू और झूले का रोमांचक करतब देखा। मेले से लौटते हुए रोहन ने पुस्तक की दुकान से अपने पसंद की कहानियों की पुस्तक खरीदी। सुहेल ने मिट्टी का बाघ और मोर खरीदा।

दलजीत - देर हो रही है अब घर लौटना चाहिए।

रीना - लेकिन अभी तो मैने बंदूक से गुब्बारे पर निशाना लगाया ही नहीं।

सुहेल- ये देखो, सामने ही निशाने वाली दुकान है। जल्दी-जल्दी निशाना लगाओ। रीना ने पाँच बार में तीन गुब्बारे फोड़े। घर वापस जाते हुए सभी मेले के बारे में चर्चा कर रहे थे।

दलजीत - रीना अच्छी निशानेबाज बन सकती है। मेरे निशाने से तो एक भी गुब्बारा नहीं फूटता।

यह सुनकर रीना, रोहन और सुहेल हँसने लगे।

रीना - मुझे मेला बहुत अच्छा लगा लेकिन चाट वाला खाने का सामान ढक कर नहीं रखा था। ये मुझे अच्छा नहीं लगा जिसकी वजह से मैं अपनी मनपसंद चाट नहीं खा पाई।

दलजीत - मुझे मेले में खोये हुए लोगों को मिलाने की व्यवस्था बहुत अच्छी लगी।

चर्चा करें

- आपके घर के आस-पास कौन सा मेला लगता है ?
- ये मेला किस अवसर पर लगता है ?
- मेले में क्या-क्या मिलता है ?
- क्या त्योहारों के अलावा भी मेला लगता है ?
- आपने कहाँ-कहाँ के मेले देखे हैं ?

क्यों लगते हैं मेले

हमारे गाँव एवं शहरों में अनेक अवसरों पर मेला लगता है, जैसे दशहरा, ईद, नागपंचमी, ईस्टर आदि। प्रत्येक मेले का अपना महत्त्व होता है। स्थानीय मेलों में स्थान विशेष के खान-पान, पहनावा, वहाँ के लोकगीत एवं लोकनृत्य का विशेष आकर्षण होता है। इन मेलों में त्योहारों से सम्बन्धित सामग्रियों की बिक्री होती है तथा झाँकियाँ सजती हैं। मेले में गाँव व शहर के शिल्पकारों को अपनी बनाई वस्तुओं को बेचने एवं बहुत सारे लोगों को अपनी कला से परिचित कराने का अवसर प्राप्त होता है। बच्चों के साथ ही बड़ों को भी इन मेलों का इन्तजार रहता है। बच्चे मेले में अपनी पसंद के खिलौने और गुब्बारे खरीदते हैं। वहीं बड़े लोग अपने दैनिक जीवन के जरूरतों की वस्तुएँ मेले से खरीदते हैं। मेले में दूर-दूर से लोग आते हैं जिससे सभी को एक दूसरे से एक ही जगह मिलने का अवसर प्राप्त होता है।

आइए जानें-

मेला ----- स्थान
कुम्भ मेला ---प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक
सोनपुर मेला-- बिहार
पुष्कर मेला-- राजस्थान
देवा शरीफ का मेला- बाराबंकी
नौचंदी का मेला --मेरठ

अभ्यास

1. पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए-
(क) बच्चों ने मेले में क्या-क्या देखा ?

(ख) दलजीत, रीना, सुहेल और रोहन ने चाट क्यों नहीं खाई ?
(ग) दलजीत को मिट्टी के खिलौने क्यों पसंद थे ?
2. मेले में किसने क्या खरीदा -

3. सोचें और लिखें-
(क) मेला जाने से पहले आपके घर में क्या-क्या तैयारी की जाती है ?
(ख) मेले में आप किसके साथ जाना पसंद करते हैं और क्यों ?
(ग) यदि आप मेले में अपने परिवार या मित्रों से बिछड़ जाएँ तो आप क्या करेंगे ?

प्रोजेक्ट वर्क

- प्रायः हम देखते हैं कि मेले के बाद वहाँ बहुत गन्दगी बिखरी पड़ी रहती है। ऐसा न हो, इसके लिए आप भी मेला देखने वालों के लिए निर्देश बना सकते हैं। साथियों के साथ चर्चा करें और ऐसे निर्देश के पोस्टर बनाकर विद्यालय के बाल मेले के प्रवेश द्वार पर लगाएँ।